अंतोन चेखव

(1860-1904)

दक्षिणी रूस के तगनोर नगर में 1860 में जन्मे अंतोन चेखव ने शिक्षा काल में ही कहानियाँ लिखना आरंभ कर दिया था। उन्नीसवीं सदी का नौवाँ दशक रूस के लिए एक कठिन समय था। यह वह समय था जब आज़ाद खयाल होने से ही लोग शासन के दमन का शिकार हो जाया करते थे। ऐसे समय में चेखव ने उन मौकापरस्त लोगों को बेनकाब करती कहानियाँ लिखीं जिनके लिए पैसा और पद ही सब कुछ था।

चेखव सारे संसार के चहेते लेखक माने जाते हैं। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि इनकी नज़र में सत्य ही सर्वोपरि रहा। सत्य के प्रति आस्था और निष्ठा, यही चेखव की धरोहर है। चेखव की प्रमुख कहानियाँ हैं–*गिरगिट, क्लर्क की मौत, वान्का, तितली, एक कलाकार की कहानी, घोंघा, इओनिज, रोमांस, दुलहन।* प्रसिद्ध नाटक हैं–*वाल्या मामा, तीन बहनें, सीगल* और *चेरी का बगीचा।*

पाठ प्रवेश

अच्छी शासन व्यवस्था वही होती है जो समता पर चलती है। सबको एक दृष्टि से देखती है। अन्यायी और उसके अन्याय को न्याय के तराज़ू पर ही तौलती है। ऐसी शासन व्यवस्था जन-जन में कानून के प्रति आदर और समर्पण का भाव जगाती है। निर्भयता की भावना भी पैदा करती है। ऐसी शासन व्यवस्था कायम तभी हो सकती है जब शासन की बागडोर सँभालने वाले पक्षपात किए बिना, अपने अधिकारों और कर्तव्यों का पालन करें। जब वे इस कसौटी पर खरे नहीं उतरते तब देश में अराजकता का साम्राज्य स्थापित होते देर नहीं लगती।

1884 में लिखी गई प्रस्तुत कहानी में रूस के महान लेखक ने एक ऐसे अवसर का वर्णन किया है जब जारशाही शासन चापलूसों, भाई-भतीजावाद के पोषक अधिकारियों के भरोसे चल रहा था। नतीजा यह था कि वे कानून के या आम आदमी के पक्ष में ऐसी फ़रियाद का भी न्यायोचित फ़ैसला नहीं कर पाते थे, जिसमें दोषी कोई मनुष्य नहीं बल्कि वहशी कुत्ता ही क्यों न हो? संभवतः ऐसी शासन व्यवस्था के लिए ही संत कवि तुलसीदास ने कभी कहा होगा, 'समरथ को नहिं दोष गुसाई'।

गिरगिट

हाथ में बंडल थामे, पुलिस इंसपेक्टर ओचुमेलॉव नया ओवरकोट पहने हुए, बाज़ार के चौराहे से गुज़रा। उसके पीछे, अपने हाथों में, ज़ब्त की गई झरबेरियों की टोकरी उठाए, लाल बालोंवाला एक सिपाही चला आ रहा था। चारों ओर खामोशी थी... चौराहे पर किसी आदमी का निशान तक नहीं था। दुकानों के खुले दरवाज़े, भूखे जबड़ों की तरह, भगवान की इस सृष्टि को उदास निगाहों से ताक रहे थे। कोई भिखारी तक उनके आस-पास नहीं दिख रहा था।

सहसा ओचुमेलॉव के कानों में एक आवाज़ गूँजी–"तो तू काटेगा? तू? शैतान कहीं का! ओ छोकरो! इसे मत जाने दो। इन दिनों काट खाना मना है। पकड़ लो इस कुत्ते को। आह...!"

तब किसी कुत्ते के किकियाने की आवाज़ सुनाई दी। ओचुमेलॉव ने उस आवाज़ की दिशा में घूमकर घूरा और पाया कि एक व्यापारी पिचूगिन के काठगोदाम में से एक कुत्ता तीन टाँगों के बल पर रेंगता चला आ रहा है। छींट की कलफ़ लगी कमीज़ और बिना बटन की वास्केट पहने हुए, एक व्यक्ति कुत्ते के पीछे दौड़ रहा था। गिरते-पड़ते उसने कुत्ते को पिछली टाँग से पकड़ लिया। फिर कुत्ते का किकियाना और एक चीख–"मत जाने दो"–दोबारा सुनाई दी। दुकानों में ऊँघते हुए चेहरे बाहर झाँके और देखते ही देखते, जैसे ज़मीन फाड़कर निकल आई एक भीड़, काठगोदाम को घेरकर खड़ी हो गई।

"हुज़ूर! यह तो जनशांति भंग हो जाने जैसा कुछ दीख रहा है," सिपाही ने कहा।

ओचुमेलॉव मुड़ा और भीड़ की तरफ़ चल दिया। उसने काठगोदाम के पास बटन विहीन वास्केट धारण किए हुए उस आदमी को देखा, जो अपना दायाँ हाथ उठाए वहाँ मौजूद था तथा उपस्थित लोगों को अपनी लहूलुहान उँगली दिखा रहा था। उसके नशीले-से हो आए चेहरे पर साफ़ लिखा दिख रहा था–"शैतान की औलाद! मैं तुझे छोड़ने वाला नहीं! और उसकी उँगली भी जीत के झंडे की तरह गड़ी दिखाई दे रही थी। ओचुमेलॉव ने इस व्यक्ति को पहचान लिया। वह ख्यूक्रिन नामक सुनार था और इस भीड़ के बीचोंबीच, अपनी अगली टाँगें पसारे, नुकीले मुँह और पीठ पर फैले पीले दागवाला, अपराधी-सा नज़र आता, सफ़ेद बारज़ोई पिल्ला, ऊपर से नीचे तक काँपता पसरा पड़ा था। उसकी आँसुओं से सनी आँखों में संकट और आतंक की गहरी छाप थी।

"यह सब क्या हो रहा है?" भीड़ को चीरते हुए ओचुमेलॉव ने सवाल किया–"तुम सब लोग इधर क्या कर रहे हो? तुमने अपनी यह उँगली ऊपर क्यों उठा रखी है? चिल्ला कौन रहा था?"

"हुज़ूर! मैं तो चुपचाप चला जा रहा था," मुँह पर हाथ रखकर खाँसते हुए ख्यूक्रिन ने कहा–"मुझे मित्री मित्रिच से लकड़ी लेकर कुछ काम निपटाना था, तब अचानक इस कम्बख्त ने अकारण मेरी उँगली काट खाई। माफ़ करें। आप तो जानते हैं मैं ठहरा एक कामकाजी आदमी... मेरा काम भी एकदम पेचीदा किस्म का है। मुझे लग रहा है एक हफ़्ते तक मेरी यह उँगली अब काम करने लायक नहीं

हो पाएगी। तो हुज़ूर! मेरी गुज़ारिश है कि इसके मालिकों से मुझे हरज़ाना तो दिलवाया जाए। यह तो किसी कानून में नहीं लिखा है हुज़ूर कि आदमखोर जानवर हमें काट खाएँ और हम उन्हें बरदाश्त करते रहें। अगर हर कोई इसी तरह काट खाना शुरू कर दे तो यह ज़िंदगी तो नर्क हो जाए..."

"हूँ... ठीक है, ठीक है," ओचुमेलॉव ने अपना गला खँखारते और अपनी त्योरियाँ चढ़ाते हुए कहा–"ठीक है यह तो बताओ कि यह कुत्ता किसका है। मैं इस मामले को छोड़ने वाला नहीं हूँ। कुत्तों को इस तरह आवारा छोड़ देने का मज़ा मैं इनके मालिकों को चखाकर रहूँगा। जो कानून का पालन नहीं करते, अब उन लोगों से निबटने का वक्त आ गया है। उस बदमाश आदमी को मैं इतना जुर्माना ठोकूँगा ताकि उसे इल्म हो जाए कि कुत्तों और जानवरों को इस तरह आवारा छोड़ देने का क्या नतीजा होता है? मैं उसे ठीक करके रहूँगा," तब सिपाही की तरफ़ मुड़कर उसने अपनी बात जारी रखी–"येल्दीरीन! पता लगाओ यह पिल्ला किसका है और इसकी पूरी रिपोर्ट तैयार करो। इस कुत्ते को बिना देरी किए खत्म कर दिया जाए। शायद यह पागल हो... मैं पूछ रहा हूँ आखिर यह किसका कुत्ता है?"

"मेरे खयाल से यह जनरल झिगालॉव का है," भीड़ से एक आवाज़ उभरकर आई।

"जनरल झिगालॉव! हूँ येल्दीरीन, मेरा कोट उतरवाने में मेरी मदद करो... ओफ़्फ़! आज कितनी गरमी है। लग रहा है बारिश होकर रहेगी," वह ख्यूक्रिन की तरफ़ मुड़ा–"एक बात मेरी समझ में नहीं आती–आखिर इसने तुम्हें कैसे काट खाया? यह तुम्हारी उँगली तक पहुँचा कैसे? तू इतना लंबा-तगड़ा आदमी और यह रत्ती भर का जानवर! ज़रूर ही तेरी उँगली पर कोई कील वगैरह गड़ गई होगी और तत्काल तूने सोचा होगा कि इसे कुत्ते के मत्थे मढ़कर कुछ हरज़ाना वगैरह ऐंठकर फ़ायदा उठा लिया जाए। मैं तेरे जैसे शैतान लोगों को अच्छी तरह समझता हूँ।"

"इसने अपनी जलती सिगरेट से इस कुत्ते की नाक यूँ ही जला डाली होगी, हुज़ूर! वरना यह कुत्ता बेवकूफ़ है क्या जो इसे काट खाता!" येल्दीरीन ने कहा–"हुज़ूर! मैं जानता हूँ यह ख्यूक्रिन हमेशा कोई न कोई शरारत करता रहता है।"

"अबे, ओ काने की औलाद! तूने मुझे ऐसा करते जब देखा ही नहीं तो झूठ-मूठ में सब क्यों बके जा रहा है? हुज़ूर तो खुद बुद्धिमान आदमी हैं और बखूबी जानते हैं कि कौन सच बोल रहा है और कौन झूठ। यदि मैं झूठ बोलता पाया जाऊँ तो मुझ पर अदालत में मुकदमा ठोक दो। कानून सम्मत तो यही है... कि सब लोग अब बराबर हैं। मैं, यदि आप चाहें तो यह भी बता दूँ कि मेरा एक भाई भी पुलिस में है..."

"बकवास बंद करो!"

"नहीं! यह जनरल साहब का कुत्ता नहीं है," सिपाही ने गंभीरतापूर्वक टिप्पणी की–"जनरल साहब के पास ऐसा कोई कुत्ता नहीं है। उनके तो सभी कुत्ते पोंटर हैं।"

"तुम विश्वास से कह रहे हो?"

"एकदम हुज़ूर!"

"तुम सही कहते हो। जनरल साहब के सभी कुत्ते मँहगे और अच्छी नस्ल के हैं, और यह–ज़रा इस पर नज़र तो दौड़ाओ। कितना भद्दा और मरियल-सा पिल्ला है। कोई सभ्य आदमी ऐसा कुत्ता काहे को पालेगा? तुम लोगों का दिमाग खराब तो नहीं हो गया है। यदि इस तरह का कुत्ता मॉस्को या पीटर्सवर्ग में दिख जाता, तो मालूम हो उसका क्या हश्र होता? तब कानून की परवाह किए बगैर इसकी छुट्टी कर दी जाती। तुझे इसने काट खाया है, तो प्यारे एक बात गाँठ बाँध ले, इसे ऐसे मत छोड़ देना। इसे हर हालत में मज़ा चखवाया जाना ज़रूरी है। ऐसे वक्त में..."

"शायद यह जनरल साहब का ही कुत्ता है।" गंभीरता से सोचते हुए सिपाही ने कहा–"इसे देख लेने भर से तो नहीं कहा जा सकता कि यह उनका नहीं है। कल ही मैंने बिलकुल इसी की तरह का एक कुत्ता उनके आँगन में देखा था।"

"हाँ! यह जनरल साहब का ही तो है," भीड़ में से एक आवाज़ उभर आई।

"हूँ! येल्दीरीन, मेरा कोट पहन लेने में ज़रा मेरी मदद करो। मुझे इस हवा से ठंड लगने लगी है। इस कुत्ते को जनरल साहब के पास ले जाओ और पता लगाओ कि क्या यह उन्हीं का तो नहीं है? उनसे कहना कि यह मुझे मिला और मैंने इसे वापस उनके पास भेजा है। और उनसे यह भी विनती करना कि वे इसे गली में चले आने से रोकें। लगता है कि यह काफ़ी मँहगा प्राणी है, और यदि हाँ, हर गुंडा-बदमाश इसके नाक में जलती सिगरेट घुसेड़ने लगे, तो यह तबाह ही हो जाएगा। तुम्हें मालूम है कुत्ता कितना नाजुक प्राणी है। और तू अपना हाथ नीचे कर बे! गधा कहीं का। अपनी इस भद्दी उँगली को दिखाना बंद कर। यह सब तेरी अपनी गलती है..."

"उधर देखो, जनरल साहब का बावर्ची आ रहा है। ज़रा उससे पता लगाते हैं... ओ प्रोखोर! इधर आना भाई। इस कुत्ते को तो पहचानो... क्या यह तुम्हारे यहाँ का है?"

"एक बार फिर से तो कहो! इस तरह का पिल्ला तो हमने कई ज़िंदगियों में नहीं देखा होगा।"

"अब अधिक जाँचने की ज़रूरत नहीं है," ओचुमेलॉव ने कहा–"यह आवारा कुत्ता है। इसके बारे में इधर खड़े होकर चर्चा करने की ज़रूरत नहीं है। मैं तुमसे पहले ही कह चुका हूँ कि यह आवारा है, तो है। इसे मार डालो और सारा किस्सा खत्म!"

"यह हमारा नहीं है," प्रोखोर ने आगे कहा–"यह तो जनरल साहब के भाई का है, जो थोड़ी देर पहले इधर पधारे हैं। अपने जनरल साहब को 'बारजोयस' नस्ल के कुत्तों में कोई दिलचस्पी नहीं है पर उनके भाई को यही नस्ल पसंद है।"

"क्या? क्या जनरल साहब के भाई साहब पधार चुके हैं? वाल्दीमीर इवानिच?" आह्लाद से सन आए अपने चेहरे को समेटते हुए, ओचुमेलॉव ने हैरानी के भाव प्रदर्शन के साथ कहा–"कितना अद्‌भुत संयोग रहा। और मुझे मालूम तक नहीं। अभी कुछ दिन रुकेंगे?"

"हाँ! यह सही है।"

"तनिक सोचो! वे अपने भाई साहब से मिलने पधारे हैं और मैं इतना भी नहीं जानता। तो यह उनका कुत्ता है। बहुत खुशी हुई... इसे ले जाइए... यह तो एक अति सुंदर 'डॉगी' है। यह इसकी उँगली पर झपट पड़ा था? हा-हा-हा! बस-बस! अब काँपना बंद कर भाई! गर्र-गर्र... नन्हा-सा शैतान गुस्से में है... बहुत खूबसूरत पिल्ला है।"

प्रोखोर कुत्ते को सँभालकर काठगोदाम से बाहर चला गया। भीड़ ख्यूक्रिन की हालत पर हँस दी।

"मैं तुझे अभी ठीक करता हूँ!" ओचुमेलॉव ने उसे धमकाया और अपने लंबे चोगे को शरीर पर डालता हुआ, बाज़ार के उस चौराहे को काटकर अपने रास्ते पर चला गया।

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए–

1. काठगोदाम के पास भीड़ क्यों इकट्ठी हो गई थी?
2. उँगली ठीक न होने की स्थिति में ख्यूक्रिन का नुकसान क्यों होता?
3. कुत्ता क्यों किकिया रहा था?
4. बाज़ार के चौराहे पर खामोशी क्यों थी?
5. जनरल साहब के बावर्ची ने कुत्ते के बारे में क्या बताया?

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए–

1. ख्यूक्रिन ने मुआवज़ा पाने की क्या दलील दी?
2. ख्यूक्रिन ने ओचुमेलॉव को उँगली ऊपर उठाने का क्या कारण बताया?
3. येल्दीरीन ने ख्यूक्रिन को दोषी ठहराते हुए क्या कहा?
4. ओचुमेलॉव ने जनरल साहब के पास यह संदेश क्यों भिजवाया होगा कि 'उनसे कहना कि यह मुझे मिला और मैंने इसे वापस उनके पास भेजा है'?
5. भीड़ ख्यूक्रिन पर क्यों हँसने लगती है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60) शब्दों में लिखिए–

1. किसी कील-वील से उँगली छील ली होगी–ऐसा ओचुमेलॉव ने क्यों कहा?
2. ओचुमेलॉव के चरित्र की विशेषताओं को अपने शब्दों में लिखिए।

3. यह जानने के बाद कि कुत्ता जनरल साहब के भाई का है—ओचुमेलॉव के विचारों में क्या परिवर्तन आया और क्यों?
4. ख्यूक्रिन का यह कथन कि 'मेरा एक भाई भी पुलिस में है....।' समाज की किस वास्तविकता की ओर संकेत करता है?
5. इस कहानी का शीर्षक 'गिरगिट' क्यों रखा होगा? क्या आप इस कहानी के लिए कोई अन्य शीर्षक सुझा सकते हैं? अपने शीर्षक का आधार भी स्पष्ट कीजिए।
6. 'गिरगिट' कहानी के माध्यम से समाज की किन विसंगतियों पर व्यंग्य किया गया है? क्या आप ऐसी विसंगतियाँ अपने समाज में भी देखते हैं? स्पष्ट कीजिए।

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए—

1. उसकी आँसुओं से सनी आँखों में संकट और आतंक की गहरी छाप थी।
2. कानून सम्मत तो यही है... कि सब लोग अब बराबर हैं।
3. हुज़ूर! यह तो जनशांति भंग हो जाने जैसा कुछ दीख रहा है।

भाषा अध्ययन

1. नीचे दिए गए वाक्यों में उचित विराम-चिह्न लगाइए—

   (क) माँ ने पूछा बच्चों कहाँ जा रहे हो

   (ख) घर के बाहर सारा सामान बिखरा पड़ा था

   (ग) हाय राम यह क्या हो गया

   (घ) रीना सुहेल कविता और शेखर खेल रहे थे

   (ङ) सिपाही ने कहा ठहर तुझे अभी मजा चखाता हूँ

2. नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित अंश पर ध्यान दीजिए—

   - मेरा एक भाई <u>भी</u> पुलिस में है।
   - यह <u>तो</u> अति सुंदर 'डॉगी' है।
   - कल <u>ही</u> मैंने बिलकुल इसी की तरह का एक कुत्ता उनके आँगन में देखा था।

   वाक्य के रेखांकित अंश 'निपात' कहलाते हैं जो वाक्य के मुख्य अर्थ पर बल देते हैं। वाक्य में इनसे पता चलता है कि किस बात पर बल दिया जा रहा है और वाक्य क्या अर्थ दे रहा है। वाक्य में जो अव्यय किसी शब्द या पद के बाद लगकर उसके अर्थ में विशेष प्रकार का बल या भाव उत्पन्न करने में सहायता करते हैं उन्हें निपात कहते हैं; जैसे—ही, भी, तो, तक आदि।

   ही, भी, तो, तक आदि निपातों का प्रयोग करते हुए पाँच वाक्य बनाइए।

3. पाठ में आए मुहावरों में से पाँच मुहावरे छाँटकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

4. नीचे दिए गए शब्दों में उचित उपसर्ग लगाकर शब्द बनाइए–

(क)	....	+ भाव	=	....		(ङ)	....	+ लायक	=	....
(ख)	....	+ पसंद	=	....		(च)	....	+ विश्वास	=	....
(ग)	....	+ धारण	=	....		(छ)	....	+ परवाह	=	....
(घ)	....	+ उपस्थित	=	....		(ज)	....	+ कारण	=	....

5. नीचे दिए गए शब्दों में उचित प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए–

मदद	+	....	=	....
बुद्धि	+	....	=	....
गंभीर	+	....	=	....
सभ्य	+	....	=	....
ठंड	+	....	=	....
प्रदर्शन	+	....	=	....

6. नीचे दिए गए वाक्यों के रेखांकित पदबंध का प्रकार बताइए–

(क) दुकानों में ऊँघते हुए चेहरे बाहर झाँके।

(ख) लाल बालोंवाला एक सिपाही चला आ रहा था।

(ग) यह ख्यूक्रिन हमेशा कोई न कोई शरारत करता रहता है।

(घ) एक कुत्ता तीन टाँगों के बल रेंगता चला आ रहा है।

7. आपके मोहल्ले में लावारिस / आवारा कुत्तों की संख्या बहुत ज़्यादा हो गई है जिससे आने-जाने वाले लोगों को असुविधा होती है। अतः लोगों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए नगर निगम अधिकारी को एक पत्र लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. जिस प्रकार गिरगिट शत्रु से स्वयं को बचाने के लिए अपने आस-पास के परिवेश के अनुसार रंग बदल लेता है उसी प्रकार कई व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए परिस्थितियों के अनुसार अपनी बात, व्यवहार, दृष्टिकोण, विचार को बदल लेते हैं। यही कारण है कि ऐसे व्यक्तियों को 'गिरगिट' कहा जाता है।
2. अवसर के अनुसार व्यावहारिकता का सहारा लेना आप कहाँ तक उचित समझते हैं? इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
3. यहाँ आपने रूसी लेखक चेखव की कहानी पढ़ी है। अवसर मिले तो लियो ताल्स्ताय की कहानियाँ भी पढ़िए।

परियोजना कार्य

1. 'गिरगिट' कहानी में आवारा पशुओं से जुड़े किस नियम की चर्चा हुई है? क्या आप इस नियम को उचित मानते हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

2. गिरगिट कहानी का कक्षा में या विद्यालय में मंचन कीजिए। मंचन के लिए आपको किस प्रकार की तैयारी और सामग्री की ज़रूरत होगी उनकी एक सूची भी बनाइए।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

जब्त	–	कब्ज़ा करना / हथिया लेना
झरबेरियाँ	–	बेर की एक किस्म
किकियाना	–	कष्ट में होने पर कुत्ते द्वारा की जाने वाली आवाज़
काठगोदाम	–	लकड़ी का गोदाम
कलफ़	–	मांड लगाया गया कपड़ा
बारजोयस	–	कुत्ते की एक प्रजाति
अकारण	–	बिना किसी कारण के
पेचीदा	–	जटिल / कठिन
गुज़ारिश	–	प्रार्थना
हरज़ाना	–	क्षतिपूर्ति / नुकसान के बदले में दी जाने वाली रकम
बरदाश्त	–	सहना
खँखारते	–	खाँसते हुए
त्योरियाँ	–	भौंहें चढ़ाना
विवरण	–	ब्योरा देना
भद्दा	–	अनाकर्षक / कुरूप
नस्ल	–	जाति / वंश
आह्लाद	–	खुशी / प्रसन्नता